भारतीय जनता पार्टी

(केन्द्रीय कार्यालय)
11, अशोक रोड, नई दिल्ली – 110001

भाजपा के राष्ट्रीय प्रवक्ता तथा संसद सदस्य श्री रवि शंकर प्रसाद द्वारा जारी प्रेस वक्तव्य

दिनांक : 04 जुलाई, 2008

भारतीय जनता पार्टी डगमगाती हुई संप्रग सरकार को बचाने के लिए हो रही बेतुकी राजनीतिक नौटंकी से चिंतित है, जिसके चलते शासन कार्य को भारी क्षति पहुंची है। आज मुद्रास्फीति की दर 11.63 प्रतिशत तक बढ़ गई है। बढ़ती कीमतों पर काबू पाने के लिए प्रभावी कदम उठाने के बजाय कुत्सित अवसरवादी राजनीति का मंचन हो रहा है। वास्तव में ऐसा होना ही था, क्योंकि संप्रग का अस्तित्व ही नकारात्मक राजनीतिक अर्थात भाजपा–विरोध पर टिका है। इसके अलावा इन दलों के जमावड़े में और कोई समानता नहीं है। इसके फलस्वरूप एक सुविधा पोषित विकृत राजनीति का उदय हुआ है, जिसमें कुछ दल यू.एन. पी.ए. के रूप में ज्ञात अस्थायी 'पार्किंग लौट' से बाहर निकलने का प्रयास करते हैं तथा यू.पी.ए. की ओर बढ़ते है और साम्यवादी जैसे अन्य दल समर्थन वापस लेने के लिए उचित तारीख का इंतजार कर रहे हैं। सुविधा की इस राजनीति ने आगे अनर्गलता की सीमा तब छू ली जब समाजवादी पार्टी के वंशवादी राजनीति के घोषित विरोध का स्थान अचानक ही भाजपा के अभिकथित बड़े खतरे ने ले लिया तथा 1998 में श्रीमती सोनिया गांधी को प्रधानमंत्री बनने से रोकने के लिए क्षमा प्रार्थना भी की गई। यह सबसे घिनौना राजनीतिक अवसरवाद है।

इस अवसरवाद को उचित ठहराने के लिए समाजवादी पार्टी के कुछ नेताओं द्वारा भाजपा को नम्बर 1 शत्रु बताने में जिस भाषा का प्रयोग किया गया है, भाजपा उसकी भर्त्सना करती है। भाजपा लोकतंत्रीय तथा राजनीतिक सिविल समाज में किसी के शत्रु होने की पूरी अवधारणा को ही रद्द करती है, जोकि हमारे जैसे जीवंत लोकतंत्र, स्वस्थ लोकतंत्रीय मानकों के मूल तत्वों के ही विरूद्ध है। प्रमुख प्रतिपक्षी दल होने के साथ–साथ भाजपा भारत के 12 राज्यों में शासक दल है – चाहे अकेले हो अथवा गठबंधन के घटक के रूप में हो। न तो कांग्रेस, न वामदल, न समाजवादी पार्टी और न कोई अन्य राजग विरोधी राजनीतिक ताकत इस सफलता यात्रा को रोकने में सफल रही है और न कभी सफल होगी। क्योंकि भाजपा को भारत के लोगों का व्यापक समर्थन प्राप्त है। एक कठोर सत्य यह है कि चाहे कांग्रेस पार्टी हो, वामदल हो, राजद हो, समाजवादी पार्टी हो या संप्रग के अन्य कोई मित्र दल हों वे सभी चुनावों का सामना करने से बेहद डरे हुए हैं। इसीलिए राजनीतिक अवसरवाद की यह फूहड़ नाटकबाजी की जा रही है।

अनिश्चितता की इस स्थति, वामदलों की समर्थन वापसी की धमकी तथा समाजवादी पार्टी का संप्रग सरकार को अटकल–आधारित समर्थन ने पूरी शासनव्यवस्था को पंगु बना डाला है। प्रमुख निर्णयों पर संशय के बादल घिर आये हैं तथा विदेश–नीति को भी साम्प्रदायिक राजनीति का पात्र बनाया जा रहा है। यह पूर्णतः स्पष्ट है कि बहुत जल्द ही मुद्रास्फीति का आंकड़ा 13–14 प्रतिशत को छू लेगा। संप्रग सरकार के पास इसका मुकाबला करने के लिए कोई नीति नहीं है, न ही कोई बहाना है क्योंकि वह स्वयं अपने Survival के संकट में घिरी है। भाजपा को विश्वास है कि भारत के लोगों ने इस खेल को समझ लिया है और वे आगामी चुनावों में संप्रग के दलों को कठोर सजा देंगे।

(श्याम जाजू)
मुख्यालय प्रभारी